10

जब यीशु ने चेलों के पांव धोए

(यूहन्ना 13:1-17)

बदला हुआ जीवन सेवा का जीवन है ...।

यीशु राजा था। राजा की बात विचार करने पर हम एक आदमी को सिंहासन पर बैठे, विजयी सेना के आगे घोड़े पर सवार या भीड़ द्वारा उनके आगे आगे मुकुट और शाही वस्त्र पहने चलते हुए, उसकी जय जय कार करते देखते हैं। परन्तु यूहन्ना 13 में हम अपने राजा को बिल्कुल अलग रूप में अपने चेलों के सामने झुकते हुए, तौलिया लपेटे और उनके पांव धोते देखते हैं। एक अवसर पर यूनानियों ने कहा था, ''हम यीशु से भेंट करना चाहते हैं'' (यूहन्ना 12:21)। हम यहां कैसे मसीह से मिल सकते हैं? जिसने सेवा के लिए नमूना ठहराया! इस घटना पर तीन स्वाल पूछते हैं।

यीशु ने यह नमूना क्यों दिया?

उस प्रश्न के दो सम्भावित सही उत्तर हैं। एक तो यह कि उन बारहों को उस सबकी आवश्यकता थी जो यीशु ने सिखाया क्योंकि उन्हें अभी तक यह समझ नहीं थी कि असली चेले के पहचान सेवा है। पहले के अवसरों में प्रेरित इस पर बहस करते थे कि राज्य में सबसे बड़ा कौन होगा। और यीशु ने उन्हें बताया था कि ''जो कोई तुम में से बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा सेवक बनें'' (देखें मरकुस 10:35-45; मत्ती 20:20-28) परन्तु उन्होंने यह सबक सीखा नहीं था। प्रभु भोज के समय भी वे इस बात की चर्चा कर रहे थे कि राज्य में सबसे बड़ा कौन होगा। लूका हमें बताता है कि प्रभु भोज की स्थापना के बाद,

> उनमें यह वाद-विवाद भी हुआ, कि हम में से कौन बड़ा समझा जाता है ?उस ने उन से कहा, अन्यजातियों के राजा उन पर प्रभुता करते हैं; और जो उन पर अधिकार करते हैं, वे उपकारक कहलाते हैं। परन्तु तुम ऐसे न होना; वरन जो तुम में बड़ा है, वह छोटे की नाईं और जो प्रधान है, वह सेवक के नाईं बने। क्योंकि बड़ा कौन है; वह जो भोजन पर बैठा या वह जो सेवा करता है? क्या वह नहीं जो भोजन पर बैठा है? पर मैं तुम्हारे बीच में सेवक के नाईं हूं (लूका 22:24-27)।

चेलों के पांव धोना सम्भवतया चेलों के सबसे बड़ा होने की बहस के बाद और यीशु के इन शब्दों के साथ हुआ: ''मैं तुम्हारे बीच में सेवक की नाईं हूं।'' तीस साल रहने के बाद प्रेरित अभी तक नहीं समझे थे कि यीशु ने क्या सिखाया था कि राज्य में सबसे बड़ा कौन होगा, न उन्हें यह समझ आया था कि सेवा का क्या अर्थ है। वे अभी भी इस बात की बहस कर रहे थे कि उन में से कौन

सबसे महत्वपूर्ण प्रेरित बनने का हक्कदार है। उन में से हर एक ने बहस की होगी कि जिसे वह अपनी प्राथमिकता का दावा पेश करने के लिए इस्तेमाल कर सकता था।

इसके अलावा उन्होंने इस बात को समझा कि वे यीशु के जीवन में किसी न किसी प्रकार के चरम तक आ रहे हैं। यीशु ने उन्हें बताया था कि वह मरने वाला है; हो सकता है कि उन्होंने यह मान लिया हो कि समय रहते अधिकार और सम्मान के इस मामले को सुलझा लिया जाना आवश्यक है।

अब वे एक महत्वपूर्ण भोज खाने के लिए इकट्ठा हुए थे। इसके लिए विशेष तैयारी की गई थी। परन्तु कोई सेवक वहां नहीं था। आम तौर पर खाने पर अतिथियों के पैर धोने या स्वयं पैर धोने के लिए अतिथियों को पाने देने का काम सेवक या नौकर ही करता था। प्रेरितों ने इस बात पर ध्यान दिया यानी इसमें कोई संदेह नहीं कि उन्हें समझ थी कि कुछ किया जाना आवश्यक है ताकि उनके पांव धोए जा सकें। परन्तु यह काम तो नौकर का था! यदि उनमें से कोई इसे करने के लिए झुक जाता तो वह अपने बड़ा बनने के दावे को छोड़ देता। कोई भी अपने आपको इस हद तक नीचा ले जाने या नम्बर वन बनने की अपनी अभिलाषाओं का परित्याग करने को तैयार नहीं था। इसलिए यह काम नहीं हो पाया। उनके अनुमान से दुसरों के पांव धुलाना, अपने आपको निकम्मे होना मान लेना था। प्रेरितों को ऐसे किसी सबक की आवश्यकता थी!

परन्तु ''क्यों?'' के प्रश्न का एक और उत्तर है। यीशु ने यह नमूना केवल इसलिए नहीं दिया कि चेलों को इसकी आवश्यकता थी बल्कि उनके लिए अपने प्रेम के कारण भी दिया। इस विवरण का परिचय इस प्रकार है।

> फसह के पर्ब्ब से पहिले जब यीशु ने जान लिया, कि मेरी वह घड़ी आ पहुंची है कि जगत छोड़कर पिता के पास जाऊं, तो अपने लोगों से जो जगत में थे, जैसा प्रेम वह रखता था, अन्त तक वैसा ही प्रेम रखता रहा (यूहन्ना 13:1)।

यीशु ने यह नमूना इसलिए भी दिया क्योंकि उसका अंत निकट था। यूहन्ना कहता है:

> और जब शैतान शमौन के पुत्र यहूदा इस्करियोती के मन में यह डाल चुका था, कि उसे पकड़वाए, तो भोजन के समय। यीशु ने जानकर कि पिता ने सब कुछ मेरे हाथ में कर दिया है और मैं परमेश्वर के पास से आया हूं, और परमेश्वर के पास आता हूं, भोजन पर से उठकर अपने ऊपरी कपड़े उतार दिया, और अंगोझा लेकर अपनी कमर बांधी (यूहन्ना 13:2, 3, 4)।

ऐसे समय में यीशु के द्वारा अपने चेलों के पास छोड़ा गया कोई भी संदेश चाहे वह वचन से हो या कर्म से, अत्याधिक महत्वपूर्ण माना जाना चाहिए।

यीशु की मृत्यु होने को है और वह अपने चेलों से प्रेम करता है, इसलिए वह उन्हें छोड़कर पाने से पहले बहुत ही महत्वपूर्ण सबक सिखाना चाहता है। उनके पांव धोकर वह उन्हें वह सबक सिखाता है।

उस नमूने में चेलों से क्या मांग की गई?

आइए इस प्रश्न का उत्तर यूहन्ना 13:3-17 में कहानी को पढ़कर देते हैं।

चार बार यीशु कहता है कि चेलों के लिए उसके नमूने को मानना आवश्यक है: ''तुम्हें भी एक दूसरे के पांव धोना चाहिए'' (आयत 14); ''तुम भी वैसा ही किया करो'' (आयत 15); ''मैं तुम से सच सच कहता हूं, दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं'' (आयत 16)। अन्य शब्दों में वह कह रहा था, ''यदि मेरे लिए सेवा करना आवश्यक है तो सेवा के लिए बढ़ने की इच्छा के लिए तुम्हें कितनी अधिक सेवा करनी चाहिए?'' ''यदि उन पर चलो, तो धन्य हो'' (आयत 17)।

परन्तु वे इस नमूने को कैसे मान सकते थे? यीशु का चेलों के पांव धोना किस प्रकार से उनके लिए नमूना था?

कइयों का मानना है कि यीशु ने कलीसिया में माने जाने के लिए एक संस्कार का नमूना दिया। आज भी कई कलीसियाओं में किसी अवसर पर अपनी आराधना सेवा के भाग के रूप में ''पांव धोने'' की प्रथा है।

परन्तु यीशु के नमूने का धार्मिक संस्कार से कोई सम्बन्ध नहीं था। उस ज़माने में घरों में पांव धुलाया जाना आम होता था, जो धुल भरे रास्तों से पैदल चलकर आने वालों और चप्पलें पहनने के कारण उनके पांव गंधे होने के कारण आवश्यक था। बाहर से घर में प्रवेश करने पर पांव धुलाने का अवसर या इससे भी बढ़कर नीचे बैठकर सेवक से पांव धुलवाना कितना ताज़गी भरा होता होगा। इसके विपरीत यह अवसर न मिलना सफ़र की थकान को और बड़ा देता होगा।

इसे कहने एक ढंग ''यीशु ने अपने चेलों के पांव क्यों धोए?'' के स्वाल का उत्तर यह कहते हुए देना हो सकता है ''क्योंकि उनके पांव गंधे थे!'' उन्हें धोए जाने की आवश्यकता थी!

इस प्रकार बाइबल में पांव धोना सेवा, पहुनाई, और भले कार्यों के संदर्भ में रखा जाता है। मम्रे के बांझ वृक्षों के नीचे तीन आदमियों की पहुनाई करते हुए उसने उनके पांव धोए थे (उत्पत्ति 18:4)। लूत ने सदोम में अपने घर यहोवा के दूतों का स्वागत करते हुए कहा, ''पधारिए, रात भर विश्राम की कीजिए, और अपने पांव धो'' (उत्पत्ति 19:2)। अपने घर में परमेश्वर का स्वागत करते हुए लाबान ने उसे ''पांव धोने को जल दिया'' (उत्पत्ति 24:32)। यूसुफ़ के भाइयों के दूसरी बार मिस्र में जाने पर यूसुफ में ने उन्हें जल दिया और उन्होंने अपने पांव धोए (उत्पत्ति 43:24)। गिबाह के एक बज़ुर्ग ने दो अजनबियों को अपने घर में लाकर और उनके लिए उपाय करके उनकी पहुनाई की; वचन कहता है, ''तब वे पांव धोकर खाने पीने लगे'' (न्यायियों 19:21)। जब दाऊद ने अबीगैल को अपनी पत्नी बनाने के लिए उसे लाने को आदमी भेजे तो उसने यह कहते हुए सेवा करने की अपनी इच्छा जताई, ''तेरी दासी अपने प्रभु के सेवकों के चरण धोने के लिए दासी बने'' (1 शमुएल 25:41)। फरीसी के घर में खाना खाते समय यीशु ने कहा, ''मैं तेरे घर में आया परन्तु तू ने मेरे पांव धोने के लिए पानी न दिया'' (लूका 7:44)। जब पौलुस यह स्पष्ट करता है कि कैसी विधवा का नाम लिखा जाए, तो वह कहता है, ''और भले काम में सुनाम रही हो, जिस ने बच्चों का पालन-पोषण किया हो; पाहुनों की सेवा की हो, पवित्र लोगों के पांव धोए हो, दुखियों की सहायता की हो, और हर एक भले काम में मन लगाया हो'' (1 तीमुथियुस 5:10)।

इसलिए पांव धोने का सम्बन्ध पहुनाई और सेवा करने से है न कि आराधना या धार्मिक संस्कार के किसी कार्य से। यीशु ने यहां कलीसिया की आराधना में माना जाने वाला नमूना नहीं ठहराया।

तो फिर यीशु ने अपने चेलों को अपना नमूना किस प्रकार मानने की इच्छा की? उसने पतरस से कहा, ''तू इसके बाद समझेगा।'' पतरस और दूसरों को इसके बाद क्या समझ आई?

पहले तो उसके चेलों को समझ आ गया होगा कि यीशु चाहता था कि वे सेवकों की तरह काम करें। पांव धोना आम तौर पर सेवक द्वारा किया जाता था। इस कारण यीशु ने अपने आपको सेवक की स्थिति तक नीचे कर दिया। (देखें फिलिप्पियों 2:4-7.) इस पर विचार करें: संसार का सृष्टिकर्त्ता, मनुष्यजाति का उद्धारकर्त्ता, राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु, चेलों का स्वामी और गुरु और प्रभु अपने घमण्डली चेलों के सामने ऐसे झुक रहा है जैसे सबसे छोटा सेवक वही हो।

दूसरा, उन्हें समझ आ गया होगा कि यीशु उनकी सेवा में कुछ विशेष खुबियां देखना चाहता था। *यीशु ने वही किया जो आवश्यक था।* चेलों के पांव गंधे थे और उसने उन्हें धो दिया। उसने समय की आवश्यकता को पूरा किया। उस आवश्यकता को पूरा करने के लिए *यीशु छोटे से छोटा यानी घटिया से घटिया किसम का काम करने को तैयार था।* मेरे ध्यान में पांव धोने से छोटा काम कोई नहीं आता। *यीशु ने उनकी भी सेवा की जो शीघ्र ही उससे फिर जाने वाले थे।* उसने अपने चेलों में से हर किसी के पांव धोने पर ज़ो दिया। इसमें पतरस भी था जिसने शीघ्र ही उसका इनकार करना था। इसमें यहूदा भी था जिसने शीघ्र ही उसे पकड़वाना था और उसे मृत्यु दिलानी थी। इसमें उसके शेष सभी चेले थे जो ''इस पर सब चेले उसे छोड़कर भाग गए'' (मरकुस 14:50)।

तीसरा, अन्त में उन्हें यह समझ आ गया होना चाहिए कि परमेश्वर के राज्य में बड़ा होने का तरीका दीनता और सेवा का तरीका है। सम्भवतया बड़ा होने का उनका विचार उनकी इस उम्मीद से प्रभावित था कि यीशु एक सांसारिक राज्य स्थापित करने को है। सांसारिक राज्य में, ''अन्यजातियों के राजा उन पर प्रभुता करते हैं; और जो उन पर अधिकार करते हैं, वे उपकारक कहलाते हैं,'' परन्तु यीशु ने आगे कहा कि ''जो प्रधान है, वह सेवक के नाईं बने'' (लूका 22:25, 26)। मरकुस ने लिखा:

> और यीशु ने उन को पास बुला कर उन से कहा, तुम जानते हो, कि जो अन्य जातियों के हाकिम समझे जाते हैं, वे उन पर प्रभुता करते हैं; और उन में जो बड़े हैं, उन पर अधिकार जताते हैं। पर तुम में ऐसा नहीं है, वरन जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने। और जो कोई तुम में प्रधान होना चाहे, वह सब का दास बने। क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया, कि उस की सेवा टहल की जाए, पर इसलिए आया, कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपना प्राण दे (मरकुस 10:42-45)।

मसीहियत में ऊपर का रास्ता नीचे को है! जो अपने आपको दीन करने को तैयार है और सेवक बन जाता है वही परमेश्वर के राज्य में सबसे बड़ा माना जाएगा।

मनुष्य की तरह बात करें तो यदि परमेश्वर ने पहचानना हो तो प्रभु की कलीसिया में हमारे

समय में सबसे बड़ा कौन था, तो वह व्यक्ति कौन होगा? क्या यह कोई बहुत बड़ा प्रचारक होगा जिसने हज़ारों लोगों को बपतिस्मा दिया हो? बहुत बड़ा लेखक होगा जिसने सच्चाई की शिक्षा देते हुए दर्जनों पुस्तकें लिखी हों? टैलिविज़न या रेडियो का वक्ता होगा? वाद विवाद करने वाला होगा? बढ़िया गीत गवाने वाला होगा? शायद भाई चारे में सबसे बड़ी कलीसिया के ऐल्डरों में से कोई? जो भाइचारे के किसी प्रकाशन में सुर्खियों में रहा। प्रभु राज्य में किसे ''सबसे बड़ा'' घोषित कर सकता है? इनमें से किसी के भी बजाय यह कोई विधवा हो सकती है जिसे उसके पड़ोस और मण्डली के अलावा जहां वह आराधना करती थी शायद किसी ने न सुना हो। परन्तु वे जानते हैं, और प्रभु भी जानता है कि वह दुसरों के सेवा यानी अपने परिवार, अपने मित्रों, अपने पड़ोसियों, मसीह में अपने भाइयों और कलीसिया के लिए चाहे वह स्थानीय हो या संसार भर की, सेवा करते हुए जीवन बिताती है। वह भले कार्यों में धनवान है और दूसरों की सेवा करते हुए मसीह की सेवा करने से समर्पित है।

यीशु के नमूने में उसके चेलों के लिए सेवक बनना और यह समझना आवश्यक था कि केवल दूसरों की सेवा करके ही वे स्वर्ग के राज्य में बड़े बन सकते हैं।

यीशु का नमूना हम से क्या मांग करता है?

मूलतया प्रभु हम से वही मांग करता है जो उसने अपने प्रेरितों से चाहा था। अपने आपको प्रेरितों की जगह रखें; जो कुछ यीशु ने उन्हें कहा वही आपसे कहता है: ''तुम्हें भी एक दूसरे के पांव धोना आवश्यक है ...। मैंने तुम्हें एक नमूना दे दिया है कि तुम भी वैसे ही करो जैसे मैंने तुम्हारे साथ किया ...। यदि तुम उन्हें करो तो धन्य हो।'' हमें भी दूसरों की सेवा करते हुए ''यानी जैसे भी उन्हें आवश्यकता हो सेवा करते हुए और सेवा करने के लिए आवश्यक बातें करते हुए, यह समझकर कि परमेश्वर के राज्य में बड़ा होना संसार के अविश्वासी लोगों द्वारा दिखाए जाने वाले अधिकार वाली बात नहीं बल्कि दूसरों की सेवा करने से आता है, यीशु के नमूने का पालन करना आवश्यक है।''

हम यीशु के नमूने का पालन कैसे कर सकते हैं? यदि हम सेवा करनी चाहते हैं तो हम क्या कर सकते हैं? एक बात तो है कि हम छोटे से छोटे काम यानी घटिया से घटिया काम करने को तैयार होंगे। हम दूसरों की भलाई करने को तैयार होंगे, उनकी भी जो घमण्डी हैं, उनकी भी जो हमारे शत्रु हैं, उन मित्रों को भी जिन्होंने हमें निराश किया है। हम अपने आपको दीन करने अर्थात उस स्थिति में सेवा करने को तैयार होंगे जो लगता है कि हमें छोटा बना देती है। और आवश्यकता पड़ने पर हम खामोशी से, बिना धूम धाम के बिना पहचान के सेवा करेंगे। हम कलीसिया की सहायता करेंगे, भाइयों की सहायता करेंगे, दूसरों की सहायता केवल इसलिए करेंगे क्योंकि हम मसीही हैं और सेवा करने के लिए अपने उद्धारकर्त्ता का अनुकरण करने वाले मसीही का यही स्वभाव है।

मैं उन लोगों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देता हूं जो बिल्कुल ऐसी सेवा करते हैं। हो सकता है कि किसी आगंतुक को वे दिखाई न दें या उनका पता न चले कि वे क्या करते हैं, पर वे तौभी सेवा करते हैं। कुछ लोग आराधना में न आने वाले लोगों को फोन करके बताते हैं कि उन्हें उनकी कमी खलती है। कुछ लोग कलीसिया का लिखने पड़ने का काम करते हैं। कुछ

चर्च बिल्डिंग की साफ़ सफ़ाई या गीतों की किताबें रखने या उठाने का काम करते हैं। कुछ बिल्डिंग के बाहर मरम्मत का काम करते हैं। कुछ लोग चर्च बुलेटिन लगाने का काम करते हैं। कलीसिया के कुछ अगुवे लोगों के घरों में जाने और कलीसिया के काम की चर्चा करने में समय बिताते हैं। कुछ लोग बाइबल स्कूल के कार्यक्रम को संचालित करने या उसमें सिखाने का काम करते हैं। कुछ लोग प्रभु भोज तैयार करते हैं। कुछ लोग किसी न किसी प्रकार अनाथों की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। कुछ लोग नर्सरी के देखभाल करते हैं। कुछ लोग ज़रूरतमंदों के लिए या किसी के ज़नाजे पर खाना लेकर आते हैं। कुछ लोग बीमारों के लिए खाना लाते हैं या बीमार लोगों या दुखी लोगों से मिलने जाते हैं। कुछ लोगों के अपने घरों में सिखाने और विश्वास में उन्हें मज़बूत करने या प्रभु में उन्हें लाने वाले लोग हैं। कुछ लोग केवल दूसरों को देखते और उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने की कोशिश करते हैं या उनके साथ प्रेम से बोलकर दूसरों को दिलेर करते हैं।

मैं आपको उनका नमूना मानने को कहता हूं: जाओ और ऐसा ही करो।

सारांश

कलीसिया की ओर संसार की सबसे बड़ी समस्या को सुलझाया जा सकता है यदि हर व्यक्ति केवल इतना समझ ले कि बड़े होने का मार्ग सेवा है। बड़ी से बड़ी समस्याएं आम तौर पर इन्हीं सवालों से जुड़ी होती हैं कि ''सबसे बड़ा'' कौन होगा? इंचार्ज कौन होगा? श्रेय या पहचान किसे मिलेगी? यदि हम संसार की तरह बनने के प्रलोभन का इन ढंगों से सामना कर सकें तो समस्याएं खड़ी होने से पहले ही खत्म हो जाएंगे।

मसीहियत का प्रतीक क्या हो? चरनी? क्रूस? मुकुट? तौलिया कैसा रहेगा? मेरा सुझाव है कि अपने उद्धारकर्त्ता को घुटनों के बल, चेलों के पांव धोते हुए देखकर हम सभी को तौलीए लपेट लेने चाहिए और एक दूसरे और पूरी मनुष्य जाति की सेवा करनी चाहिए। यदि यीशु अपना तौलिया लपेटने और आपके पांव धोने को तैयार था तो आपको इतने घमण्डी क्यों होना चाहिए कि आप अपना तौलिया पहनकर दूसरों की सेवा वैसे ही करें जैसे यीशु ने अपने चेलों की सेवा की?

क्या आप सेवा करने को तैयार हैं? मसीह के चेले बन जाएं और दूसरों की सेवा उसकी कलीसिया में और उसके द्वारा करें।